ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

इस अंक का मूल्य : १० रुपये

वर्ष ३८, अंक १८

सोमवार १६ मार्च, २०१५ से रविवार २२ मार्च, २०१५

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११६ दयानन्दाब्द : १९२

विक्रमी सम्वत् २०७२ वार्षिक शुल्क : २५० रुपये

फैक्स : २३३६५९५९ ई-मेल:aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पृष्ठ संख्या : १ से १२

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

ओ३म्

वेद की ज्योति - जलती रहे

घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ

आओ ! संकल्प करें

1 व्यक्ति 12 महीने 12 परिवार

होली के शुभ अवसर पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में एवं दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से

आर्य परिवार

होली मंगल मिलन

होली के दिन

'पं. रामचन्द्र देहलवी जी के परिजनों का किया गया सम्मान'

आर्य परिवारों ने आर्यसमाज के कार्यों को बढ़ाने का लिया संकल्प

समारोह के अवसर पर अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान

श्री योगेश मुंजाल जी का स्वागत करते श्री राजेन्द्र दुर्गा जी

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी एवं श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी का स्वागत

डॉ हर्षवर्धन जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मान

'ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति पुरस्कार-२०१५' से सम्मानित ब्र. नन्द किशोर जी

पं. रामचन्द्र देहलवी जी की दोहित्री डॉ. श्रीमती सुवीरा रैना जी का स्वागत करती श्रीमती वीणा आर्या जी

पं. रामचन्द देहलवी जी के मूल स्वर की ओडियो सीडी का विमोचन

साध्वी उत्तमायति जी का स्वागत

डॉ. वेदपाल जी का स्वागत

श्री ओम प्रकाश सिंहल जी का स्वागत

पद्मभूषण श्री बृजमोहन लाल मुंजाल जी के साथ सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य

ठाकुर विक्रम सिंह जी का स्वागत करते श्री सत्यानन्द आर्य जी

ब्र. सत्यप्रकाश को आशीर्वाद देते श्री बृजमोहन लाल जी मुंजाल

श्री हरीश बत्रा जी का स्वागत करते उत्तरी प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल के मन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी

श्री करुणा प्रकाश जी का स्वागत

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी का स्वागत करते सभा मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा

श्री संजय आर्य (रानी बाग) का सपरिवार स्वागत

पं. रामचन्द्र देहलवी के प्रदौहित्र श्री अतुल आर्य जी का सम्मान

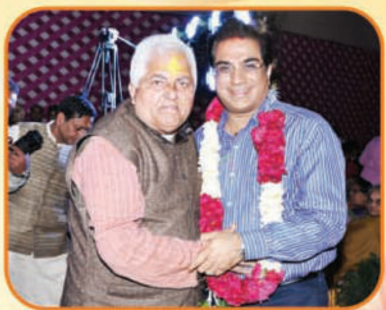
श्री राकेश ग्रोवर जी का स्वागत करते सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी

समारोह में सबसे व्योवृद्ध आयु का होने पर सम्मान प्राप्त करते महाशय धर्मपाल जी

श्रीमती सन्तोष मुंजाल जी का स्वागत करती साध्वी उत्तमा यति जी

हास्य कवि श्री अनिल अग्रवंशी जी का स्वागत करते श्री राजीव आर्य जी

समारोह में पधारे नवयुगल दम्पति श्रीमती एवं श्री निखिल आर्य का स्वागत

सबसे कम आयु (२८ दिन) की बालिका कु. रिया आर्या का को आशीर्वाद

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में समस्त आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से
13वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न

अनूठे संगम में शामिल हुए 28 दिन के बालक से 92 वर्ष के वयोवृद्ध

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचंद्र देहलवी के जीवन पर आधारित नाटिका को देख भाव-विभोर हुए दर्शक

आर्य परिवार होली मंगल मिलन कार्यक्रम में आकर मन प्रसन्न हुआ– श्री बृजमोहन मुंजाल

भारतीय वैदिक परंपरा के अनुसार वैदिक पर्वों की शृंखला में नवसस्येष्टि वासंती पर्व (होलिकोत्सव) का विशेष महत्व है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 13 वां होली मंगल मिलन समारोह फाल्गुन पूर्णिमा वि.स. 2071 गुरूवार तद्नसार 5 मार्च 2015 को सांयकालीन वेला में रघुमल आर्य कन्या सीनियर सैकेंडरी स्कूल राजा बाजार कनॉट प्लेस में गत 12 वर्षो की भांति उमंग व उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रफुल्लित वातावरण, आह्लाद की अनुभूति, खुशियों का उत्साह हर व्यक्ति प्रसन्नता से एक दूसरे से मिलन, ऐसे माहौल की भावनाओं को शब्दों में ढालना कभी-कभी असंभव सा होता है। दिल्ली सभा द्वारा 13 वां आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह चंदन और पुष्प से होली कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली के हजारों आर्यजनों ने भाग लिया।

प्रवेश द्वार पर ही चंदन का तिलक कर आर्यजनों का उत्साह व प्रेम से एक दूसरे के गले मिलकर स्वागत किया गया। रंग-बिरंगे परिधानों से सजे आनंदविभोर तथा चहकते छोटे-छोटे बच्चों की अठखेलियां मंत्र मुग्ध कर देने वाली थीं। समारोह का शुभारंभ मेरठ से पधारे मूर्धन्य विद्वान् डॉ. वेदपाल जी के ब्रह्मत्व में आयोजित नव सस्येष्टि यज्ञ से किया गया। नव सस्येष्टि यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे यज्ञों के आयोजन का वर्णन शास्त्रों में (इष्टि, सोम और चयन) तीन प्रकार से मिलता है। इष्टि यज्ञ ऋतुओं की संधि पर आयोजित किए जाते हैं क्योंकि ऋतुओं के परिवर्तन से जो मानव शरीर में व्याधि उत्पन्न होती है, यज्ञों के माध्यम से उन होने वाली व्याधियों से मुक्ति मिलती है और मनुष्य आरोग्यता प्राप्त करता है। नए अधपके अन्न की आहुति भी यज्ञ में प्रदान की जाती है। तिनकों की आग पर अधपका अन्न होलक, जिसका अपभ्रंश शब्द होला जो नव सस्येष्टि का प्रतीक है। यजमान के रूप में श्री सुरेश अग्रवाल व श्रीमती संतोष अग्रवाल शालीमार बाग, श्री नितिन कुमार सिंगला व श्रीमती पायल यमुना विहार, श्री वीरेंद्र खट्टर व श्रीमती कृष्णा खट्टर जी (जनकपुरी), श्री नरेश गुप्ता व श्रीमती ललतेश गुप्ता, श्री राजेंद्र प्रसाद दुर्गा व श्रीमती उमा शशि दुर्गा जी तथा श्री जितेंद्र आर्य व श्री भीम सेन आर्य जी(सोनीपत)उपस्थित रहे।

ब्रह्मचारी नन्द किशोर को, 'ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति पुरस्कार' 51000/- रुपए एवं स्मृति चिह्न भेंट

तदुपरांत मुख्य मंच से आर्य विद्यालय की कन्याओं ने होली-आई गीत प्रस्तुत किया। कुमारी नंदिता व अभिनंदन द्वारा दिल्ली सभा द्वारा प्रारंभ की गई योजना 'घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ' पर सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई और मंच से यह आह्वान किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर पर यज्ञ करना होगा और कम से कम एक साल में 12 नए परिवारों में यज्ञ कर आर्य समाज तथा महर्षि दयानंद के मंतव्यों को घर-घर तक पहुंचाएं। इस योजना के अंतर्गत दिल्ली सभा की ओर से पुरोहित की व्यवस्था की गई है। इस योजना में 12000 नए परिवारों को यज्ञ से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। 'घर घर यज्ञ- हर घर यज्ञ' योजना हेतु आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य जी के चाचा जी श्री ओमप्रकाश आर्य जी ने सभा पुरोहित ब्र. सत्य प्रकाश जी को एक्टिवा स्कूटी भेंट की। दिल्ली के विभिन्न विद्यालयों द्वारा दी गई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, नृत्य नाटिकाएं तथा गीत भजन ने उपस्थित आर्यजनों को मंत्रमुग्ध कर दिया जिसमें रामचंद्र देहलवी (शास्त्रार्थ महारथी) जी के जीवन पर आधारित नाटिका ने वातावरण को भावुकता से परिपूर्ण कर दिया। इस अवसर पर पिछली

पं. रामचन्द्र देहलवी जी की मूल आवाज की सीडी का विमोचन, सभा के विक्रय विभाग में मात्र 30/- रु. में उपलब्ध

परंपराओं के अनुसार किसी एक महापुरुष के परिवार को सम्मानित कर आर्य समाज से जोड़ने का प्रयास करते हुए दिल्ली सभा ने पंडित रामचन्द्र देहलवी की दोहित्री श्रीमती डॉ. सुवीरा रैना एवं प्रदोहित्र श्री अतुल आर्य जी को सपरिवार सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पं. जी के मूल स्वर की सीडी तथा शंका समाधान पुस्तक का विमोचन भी किया गया। जो कि सभा के विक्रय विभाग में मात्र 30/- रुपए में उपलब्ध है। सुप्रसिद्ध हास्य कवि श्री अनिल अग्रवंशी ने अपनी कविताओं के माध्यम से भ्रष्ट राजनीति, धर्म के आडम्बरों एवं शैक्षिक प्रणाली पर व्यंग्य करते हुए वातावरण को हंसी खुशी के ठहाकों से सराबोर कर दिया। इस अवसर पर दिल्ली क्षेत्र से पधारे प्रसिद्ध गणमान्य व्यक्तियों को माल्यार्पण, शॉल ओढ़ाकर तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह के अध्यक्ष महाशय श्री धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) मुख्यातिथि पद्मभूषण श्री बृजमोहन जी मुंजाल (चेयरमैन , हीरो मोटो कोर्प) विशिष्ट अतिथि श्री योगेश जी मुंजाल (चेयरमैन, मुजाल शोवा लिमि.) व श्री राकेश जी ग्रोवर (चेयरमैन, ग्रोवर संस) श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल (उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) डॉ. सुरेंद्र कुमार, कुलपति, गुरूकुल, कांगड़ी विश्वविद्यालय, ठाकुर श्री विक्रम सिंह, श्री ओमप्रकाश जी सिंघल (विश्व हिन्दू परिषद) श्री करूणा प्रकाश जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, श्री राजेंद्र कुमार (एम.डी. एच.)परिवार, श्री हरीश बत्रा, डा. श्री हर्षवर्धन जी (केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार) का शॉल ओढ़ाकर तथा ओ३म् का स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सभा की ओर से 'स्व. ब्र. राजसिंह आर्य स्मृति पुरस्कार' जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर आर्य समाज के प्रचार प्रसार में सलंग्न महानुभाव को प्रति वर्ष होली मंगल मिलन के शुभ अवसर पर प्रदान किए जाने की घोषणा की गई। इस वर्ष 'ब्र. राजसिंह आर्य प्रथम स्मृति पुरस्कार से ब्र. नंदकिशोर जी को स्मृति पत्र और 51000/-रुपये देकर सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक प्रस्तुति देने वाले विद्यालय, आर्य वैदिक पाठशाला, प्रीत विहार, आर्य वीर दल आर्य समाज कीर्ति नगर, आर्य वीर दल प्रीत विहार, आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार, आर्य शिशु शाला, ग्रेटर कैलाश-पार्ट-1, गुरुकुल रानीबाग, गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम् हरिनगर, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादीपुर, खामपुर व रघुमल आर्य कन्या विद्यालय सीनियर सै. स्कूल राजा बाजार, कनॉट पलेस नई दिल्ली के छात्र छात्राएं रहीं।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने समारोह में उपस्थित विद्वान् अतिथिगण एवं समस्त आर्यजनों को होली की शुभकामनाएं दीं और सबका हार्दिक धन्यवाद किया और आर्यजनों को प्रेरणा देते हुए कहा कि प्रत्येक आर्य आज यह प्रण लें कि वह वर्ष में 12 नए परिवारों को यज्ञ एवं आर्य समाज की विचारधारा से जोड़ें। श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी (उपप्रधान सार्वदेशिक सभा) ने अपने उद्बोधन में कहा कि दिल्ली सभा पिछले 12 वर्षों से लगातार होली मंगल मिलन समारोह को उत्साह पूर्वक मना रही है। इस मंगल मिलन समारोह ने आर्य जनता को एक नई दिशा प्रदान की हैं। समारोह के मुख्य अतिथि पद्मभूषण श्री बृजमोहन मुंजाल जी ने कहा कि आर्य परिवार होली मंगल मिलन कार्यक्रम में आकर मन प्रसन्न हुआ। इस अवसर पर डा. हर्ष वर्धन केंद्रीय मंत्री भारत सरकार ने अपने उद्बोधन में कहा कि परिवार एवं संस्कृति के उच्च आदर्शों की पुनर्स्थापना और चेतना के लिए होली मंगल मिलन का यह समारोह अद्भुत है तथा घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ योजना महर्षि के स्वप्न को साकार करने का सुंदर कार्यक्रम है। महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि इसी प्रकार नई कल्याणकारी योजनाओं के शुभारंभ से ही आर्य समाज की उन्नति होगी । श्री ओमप्रकाश जी सिंघल (विश्व हिंदू परिषद) ने कहा कि यदि आज आर्य परिवार अथवा हिंदुओं के सिर पर चोटी और जनेउ दिखाई दे रहे हैं, तो यह स्वामी दयानंद सरस्वती तथा स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रयासों के कारण है। मंच संचालन कर रहे श्री विनय आर्य जी महामंत्री

घर-घर यज्ञ योजना के लिए 70/- रुपये का साहित्य सेट

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने उद्बोधन में होली मंगल मिलन की उपयोगिता एवं महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें अपने जीवन को यज्ञ से जोड़ना होगा और यहां से प्रत्येक आगंतुक को कुछ न कुछ संदेश लेकर जाना है। कुछ विशेष साहित्य भी सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध हैं, उसको लेकर पढ़े, समझें, जिससे अपना उत्थान हो और समाज का भी कल्याण हो। धर्म और संस्कृति का प्रचार प्रसार हो। इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति वयोवृद्ध आर्यजन, सबसे छोटे बालक तथा नवविवाहित दम्पति को सम्मानित किया जाता है। वयोवृद्ध युवा का सम्मान सुप्रसिद्ध उद्योगपति, दानवीर महाशय धर्मपाल जी (एमडीएच) जिनकी आयु लगभग 92 वर्ष है।

सबसे कम आयु मात्र 28 दिन की बालिका कु. प्रिया आर्या को सम्मानित किया गया तथा नव युगल श्री निखिल आर्य जी (जहांगीरपुरी) को सपत्नीक सम्मानित किया। इसी शृंखला में टेटू लगाना, बैलून उड़ाना तथा ईनामी कूपन योजना भी बालकों के लिए आकर्षण का केंद्र रही। कूपन के विजेता श्री सदाशिव आर्य जी, सदस्य आर्य समाज आर्य नगर, पहाड़गंज को 5000/- रुपये कीमत का वेद भाष्य सेट भेंट किया गया। कार्यक्रम के अंतिम प्रस्तुति आर्य वीर दल कीर्ति नगर के आर्य वीरों द्वारा 'रंग दे बसंती' गीत के के माध्यम से आर्यजनों में उत्साह का संचार किया। पश्चात् शांतिपाठ के साथ समारोह का समापन हुआ। इस अवसर पर सुव्यवस्थित ऋषि लंगर की व्यवस्था महाशय धर्मपाल जी मैनेजिंग डारेक्टर एम.डी.एच एवं प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली द्वारा की गई ।

श्री विनय आर्य

वेद स्वाध्याय

हमारा जीवन यज्ञमय हो

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः।। ऋ. 10.57.1

ऋषिः- बंधुः सुबंधुः ।। **देवता**-विश्वेदेवाः।। **छन्दः**- गायत्री।।

शब्दार्थ- इंद्र - हे परमेश्वर! **वयम्**-हम **पथः मा प्रगाम**- सन्मार्ग को छोड़कर न चलें **सोमिनः** ऐश्वर्ययुक्त होते हुए **वयं यज्ञात् [मा प्रगाम]**- हम यज्ञ को छोड़कर न चलें। **अरातयः**:- अदानभाव **नः अंतः मा स्थुः**- हमारे अंदर न ठहरे।

विनय- हे इंद्र, परमैश्वर्यवान्! हम तुमसे ऐश्वर्य नहीं मांगते। हमारी तुमसे याचना तो यह है कि हम सदा सन्मार्ग पर चलते जाएं, इसको कभी न छोड़ें। सन्मार्ग पर चलते हुए हमें जो कुछ ऐश्वर्य नहीं होता- उसमें ईश्वरत्व नहीं होता-सामर्थ्य नहीं होता। सन्मार्ग से जो कुछ ऐश्वर्य मुझे मिलेगा, उस ऐश्वर्य को तुझसे पाकर हे इंद्र! मेरी प्रार्थना है कि मैं यज्ञ से कभी विचलित न होऊं। यज्ञ करता हुआ-उपकार करता हुआ ही मैं उस तेरे दिए ऐश्वर्य को भोगूं। जो कुछ तुम्हारे द्वारा (तुम्हारे देवों द्वारा) मुझे मिला है, उसे तुम्हें (देवों को) बिना दिये भोगना चोरी है। ऐसा पाप स्वार्थवश हम कभी न करें। यज्ञ को, आत्मत्याग को, परार्थ में आत्म-विसर्जन को हम कभी न भूलें। यज्ञ के बिना भोग भोगना विषपान करना है, अतः हमारी दूसरी प्रार्थना है कि हम यज्ञ को कभी न छोड़े। हमारी तुमसे यह प्रार्थना नहीं है कि तुम हमारे शत्रुओं का नाश कर दो।

हमारी याचना तो यह है कि हमारे अपने अंदर 'अराति' न ठहरें। हमारे अंदर अराति न हों तो बाहर हमारा अराति कोई कैसे हो सकता है। अराति, अर्थात् अदानभाव हमारे अंदर क्षण-भर भी न ठहरे, क्षणभर के लिए भी न आये। अदानभाव होते हुए यज्ञ असंभव है, अतः हमारा एकमात्र शत्रु अदान भाव ही है यह अंदर का शत्रु ही हमारा शत्रु है। हे प्रभो! हमरी रक्षा करो। फिर बाहर के किसी शत्रु की हमें परवाह नहीं।

''दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' योजना का उत्साहपूर्वक शुभारम्भ''

ऐसी योजनाओं के क्रियान्वयन से ही होगा महर्षि दयानन्द का स्वप्न साकार - महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)

दिल्ली सभा द्वारा प्रारंभ की गई योजना के माध्यम से प्रत्येक आर्य परिवार को यज्ञ से जोड़ना ही नहीं बल्कि महर्षि दयानंद वेद एवं आर्य समाज की विचार धारा को प्रत्येक उस व्यक्ति तक पहुंचाना है जो आत्म कल्याण और राष्ट्र कल्याण की इच्छा रखता है। इसके लिए कुछ विशेष साहित्य 'विक्रय किट' जिसमें महर्षि दयानंद रचित सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज के स्वर्णिम सूत्र पत्रक, प्रसिद्ध भजनोपदेशकों के मधुर भजनों की सी.डी. व अन्य पुस्तकें शामिल हैं जो दिल्ली सभा ने तैयार की है। सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। आप श्री विजय आर्य जी से 9540040339 पर संपर्क कर प्राप्त कर सकते हैं। -संपादक

आर्य समाज एक विचार धारा है जो ईश्वर की वाणी वेद से पूर्णतः पोषित है। इस विचारधारा में ऋषि मुनियों का उत्कृष्ट चिन्तन और महर्षि दयानन्द की अन्तर्चेतना, त्याग, बलिदान, पुरूषार्थ तथा सर्वात्मकल्याण की भावना शरीर में रक्त की भांति कार्य कर रही है। मानव मात्र के कल्याण की भावना के उद्देश्य से ही दिल्ली सभा ने वेद और महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया है। इसके अन्तर्गत कुशल एवं प्रशिक्षित पुरोहितों का चयन किया गया जो प्रत्येक आर्य परिवार को वर्ष में 12 परिवारों को यज्ञ एवं आर्य समाज की विचारधारा से जोड़ने के लिए प्रेरित करेंगें, चाहे वह उसका मित्र, पड़ोसी अथवा सम्बंधी हो । इस प्रकार यह यज्ञीय कार्यक्रम एक श्रृंखलाबद्ध सुनियोजित विधि-विधान के साथ प्रस्तावित किया जा रहा है। इस माध्यम से अनेक परिवारों को लाभ होगा । यह ज्ञान का दीपक धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रज्ज्वलित हो और संसार में वेद रूपी सूर्य का आलोक सर्वत्र विद्यमान हों यही वेद का सन्देश है कि- सारे संसार को श्रेष्ठ बनाओ ('कृण्वन्तो विश्वमार्यम्')।

यह शुभकार्य दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के सहयोग से ही सम्पन्न होगा। दिल्ली क्षेत्र की प्रत्येक आर्य समाज तथा समाज से सम्बंधित आर्य जन यह सुनिश्चित करें कि- महीने में कम से कम एक ऐसे परिवार को यज्ञ से जोड़े कि जो आर्य समाज व उसकी विचारधारा से अनभिज्ञ है, वह चाहे पड़ोसी हो अथवा मित्र हो, उसे अपने घर पर यज्ञ के आयोजन में आमन्त्रित करें और उसे यजमान बनाएँ अथवा निकट के आर्यसमाज में यज्ञ में बुलाएं उसका सम्मान करें, यजमान बनाएं और आर्य समाज, यज्ञ के महत्वपूर्ण मिशन को उसके मानस पटल पर छायांकित करने का प्रयास करें और यह निश्चित है कि वह व्यक्ति जितना यज्ञ के महत्त्व को जानेगा, समझेगा उतना ही आर्य समाज की ओर आकृष्ट होता चला आएगा। इसी प्रकार से आर्य समाज से सम्बंधित प्रत्येक आर्य जन अपनी भूमिका निभाएगा तो यह 'मिशन अवश्य उन्नति को प्राप्त होगा । दिल्ली सभा ने इस वर्ष में 12 हजार नए परिवारों के घर-तक यज्ञ सन्देश को पहुँचाने का लक्ष्य रखा है।

दिल्ली सभा की ओर से इस अभियान को मूर्तरूप देने के लिए आर्य समाजों को कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं जो इस प्रकार हैं-

1 दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारी, सदस्य एवं कार्यकर्त्तागण भी अपने-अपने स्तर पर संकल्प लें तो इस कार्य की सफलता में कोइ सन्देह नहीं रहेगा।

2 आप इस सम्बन्ध में सभी सदस्यों की एक लघु बैठक बुला लेवें । सभा की ओर से भी कोई अधिकारी अवश्य ही आने का प्रयत्न करेगा।

3 हम सभी ये महसूस करते है कि हम जब तक नए परिवारों में नही जाऐंगे तब तक हम सीमित ही रहेंगे। हर प्रकार तन-मन-धन की क्षमता का उपयोग करें। ऐसा मेरा निवेदन है।

4 अपने मित्र, पड़ोसी तथा पारिवारिक सम्बन्धियों की सूची तैयार करें, जिनका अभी तक आर्य समाज से सम्बन्ध न रहा हो और अपने मित्र अथवा पड़ोसी को घर पर यज्ञ में बुलाकर यजमान बनाएँ अथवा आर्य समाज के साप्ताहिक यज्ञ में यजमान बनाकर उनको यज्ञ के महत्त्व को समझाएँ तथा उसी प्रकार का साहित्य भेंट देकर सम्मानित करें और उनका उत्साह वर्धन करें।

5 आप चाहें तो आर्य समाज के पुरोहित महोदय से निवेदन करें अथवा आप स्वयं यज्ञ कराएँ।

6 समाज के कार्यों में आप भी संलग्न रहे और उन परिवारो से भी लघु कार्य करवाएं, मात्र 70 रुपये में साहित्य विक्रय किट सभा ने तैयार की है, वह इन सभी परिवारों में पहुँचाएं।

7 आप अपने ड्राइवर, अपनी कालोनी के चौकीदार घर में काम करने वाली, अपके बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापक/अध्यपिकाएं, आपकी कालोनी में प्रेस करने वाला, आपके पास अखबार डालने वाला, तथा अपने मित्र व व रिश्तेदार आदि को आर्य विचारधारा से जोड़ने का प्रयत्न करें ।

8 उपरोक्त कार्य की वृद्धि हेतु आप सभा के पुरोहित ब्र. सत्य प्रकाश जी का भी सहयोग ले सकते है जिनका सम्पर्क सूत्र 09650183335 नम्बर हैं। 9 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' कार्यक्रम योजना को व्यापकता प्रदान करने हेतु सभा ने एक नम्बर वाट्स एप्प 9540045898 जारी किया है। इस नं. को आप नोट कर लें और इस कार्यक्रम (योजना) को गति प्रदान करने हेतु सभा से जुड़ें।

सभी आर्यजन इस व्हाटस न. 9540045898 को अपने की एड्रस लिस्ट में आर्य समाज सूचना लिखकर नोट कर लें।

साहित्य विक्रय किट, अन्य, प्रचार-प्रसार सामग्री तथा यज्ञीय व्यवस्था हेतु उपरोक्त नं. पर एस.एम.एस करें।

'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' यह केवल योजना ही नहीं बल्कि सभा एक प्रकल्प है, यह एक सूक्ष्म बीजारोपण है जो आगे चलकर एक विशाल वृक्ष का रूप धारण करेगा। आर्य महानुभावों! यह किसी एक व्यक्ति या संस्था का कार्य नहीं, यह तो वेद की आज्ञा और महर्षि का महास्वप्न है। इसमें समस्त आर्य समाजों व आप सब का सहयोग अपेक्षित है। यह वह महान मिशन है जिस पर आर्य समाज की सम्पूर्ण विचारधारा केन्द्रित हो जाती है तो आइए हम सब एक जुट होकर महर्षि के मिशन और दिल्ली सभा की योजना को सफल बनाएँ। घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ । एक क्रांति, जन चेतना तथा जन आन्दोलन बन जाएं और भारतवर्ष पुनः आर्यावर्त्त बन जाए, विश्व आर्य बन जाए, ऐसी अभिलाषा के साथ। 'कृण्वन्तो- विश्वमार्य्यम्'।

- श्री विनय आर्य, महामन्त्री,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुदित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष

आर्यसमाज स्थापना का उद्देश्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना चैत्र/शुक्ल/प्रतिपदा वि.सं. 1932 तदनुसार 10 अप्रैल 1875 को संसार के हितार्थ की। उसी उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए श्री यशपाल आर्य 'बन्धु जी मुरादाबाद का यह लेख पूर्व समय में भी आर्य सन्देश में प्रकाशित किया जा चुका है। इसकी प्रासंगिकता को देखते हुए पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। - सम्पादक

प्रत्येक संगठन, समाज अथवा संस्था की स्थापना के पीछे कोई न कोई प्रयोजन अथवा उद्देश्य अनुरूप ही उसके कार्यो को जांचा परखा जाता है और उसी के अनुरूप उसे जन सहयोग भी मिला करता है। उन्नीसवीं शताब्दी के सर्वाधिक प्रगतिशील जन आन्दोलन आर्यसमाज की स्थापना भी किसी विशेष उद्देश्य से की गई थी। दुःख है कि जन सामान्य तो दूर आर्य समाज के सदस्य तथा सहयोगी भी आज आर्यसमाज स्थापना दिवस पर उसकी स्थापना का उद्देश्य जन सामान्य को, विशेषतया आर्य जनों को बता देना आवश्यक कर्त्तव्य बन जाता है। आइए! देखें आर्य समाज स्थापना के पीछे क्या भावनाएँ कार्य कर रही थीं और क्या उद्देश्य लेकर इसकी स्थापना की गई थी।

स्थापना का उद्देश्य कैसे जानें?

आज जब कि आर्य समाज को स्थापित हुए 140 वर्ष हो गए हैं, यह कैसे पता चले कि आर्य समाज की स्थापना किस उद्देश्य को लेकर की गई थी? संस्थाओं, समाजों, संगठनों तथा जन आन्दोलनों का इतिहास इसी दृष्टि से सुरक्षित रखा जाता है कि भावी पीढ़ी उस इतिहास के माध्यम से अपने अतीत को देखकर उससे कुछ प्रेरणा पा सके। समाज के इतिहास से उसके उद्देश्यों का भी पता लगाया जा सकता है। आर्य समाज का उद्देश्य जानने के लिए हमारे पास दो साधन हैं - प्रथम साधन है वह घोषणा पत्र जो इसकी स्थापना के बाद इसके पंजीकरण हेतु पंजीकर्त्ता रजिस्ट्रार को दिया गया था और दूसरा साधन है वे नियम जो इसकी स्थापना के समय निर्धारित किए गए थे। रजिस्ट्रार को जो घोषणा पत्र दिया गया था, उसमें आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य संसार में सत्य सनातन वेद-विद्या का प्रचार तथा प्रसार करना बताया गया था। उसके अनुसार संसार में वेदों का प्रचार करना आर्य समाज का उद्देश्य था क्योंकि संगठित और व्यवस्थितरूप से वेदों के प्रचार के लिए व्यवस्थित संगठन की आवश्यकता तीव्रता से महसूस की गई, इस लिए आर्य समाज का गठन किया गया।

आर्य समाज स्थापना के उद्देश्य को जानने का दूसरा साधन है, उसके नियम और उप नियम। आर्य समाज के उप नियमों को देखने से ज्ञात होता है कि आर्य समाज के उद्देश्य उसके नियमों में वर्णित हैं। उप नियमों की शब्दावली देखें-''इस समाज के उद्देश्य वही हैं जो इसके नियमों में वर्णित हैं'' अतः आर्य समाज के उद्देश्यों की खोज हमें आर्य समाज के नियमों से करनी होगी। अनेक लोगों को इस तथ्य का ज्ञान नहीं होगा कि आर्य समाज की स्थापना के वर्तमान दस नियम वे नहीं जो आर्य समाज की स्थापना के समय बनाए गये थे। उस समय अर्थात सन् 1875 ई0 में आर्य समाज के दस नहीं 28 नियम थे। इन 28 नियमों में इसके उद्देश्यात्मक और संगठनात्मक सभी नियम सम्मिलित थे। प्रथम इन नियमों को देखते हैं, उसके पश्चात् वर्तमान नियमों की चर्चा करेगें। इन 28 नियमों में से जो सर्वप्रथम नियम है, उसमें आर्य समाज के उद्देश्य का स्पष्ट उल्लेख है। इस नियम की शब्दावली इस प्रकार है- ''सब मनुष्यों के हितार्थ आर्यसमाज का होना आवश्यक है।'' (द्रष्टव्य- आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग, पृष्ठ 325: पं0 इन्द्र विद्यावाचस्पति) इस नियम की शब्दावली बता रही है कि आर्य समाज का उद्देश्य मनुष्य मात्र का हित करना है। आर्यो, हिन्दुओं अथवा भारतवासियों तक इसका हित करने का लक्ष्य सीमित नहीं अपितु सम्पूर्ण मानव-जाति का हित करने का इसका उद्देश्य या लक्ष्य है। आर्य समाज का यह उद्देश्य किसी वर्ग विशेष, जाति विशेष, सम्प्रदाय विशेष अथवा देश या काल विशेष तक सीमित नहीं। यह पूर्णतया सर्वजनीय एवं सर्वदेशीय है। अतः आर्यसमाज की स्थापना के पीछे मूल भावना मनुष्यमात्र का हित साधन है। विश्व भर के मनुष्यों का हित चाहने वाली अति कल्याणकारी यह संस्था भी अपने सर्वहितकारी उद्देश्य के कारण विश्व-संस्था का स्थान पाने की पूर्ण हकदार हैं।

पं0 इन्द्रजी विद्यावाचस्पति के अनुसार- ''यह विस्तृत उद्देश्य है जिससे आर्य समाज की स्थापना हुई। संसार में इससे बढ़कर व्यापक उद्देश्य और नहीं हो सकता।'' ;आर्य समाज का इतिहास प्रथम भाग, पृष्ठ 92द्ध वस्तुतः इससे पहले इतने व्यापक और विशाल उद्देश्य के बारे में कोई सोच तक नहीं सकता था। किन्तु इसके संस्थापक की तो बात ही सर्वथा निराली है। वे इतने महान् तथा व्यापक उद्देश्य से भी संतुष्ट नहीं थे। ज्ञातव्य है कि मुम्बई के ये 28 नियम आर्य जनों के बनाए थे, महर्षि के नहीं। महर्षि आर्यजनों द्वारा बनाए गए इतने व्यापक और महान नियमों से संतुष्ट क्यों नहीं हुए, यह विचारणीय है। मनुष्य, मनुष्य मात्रा का हित साधे, यह छोटी बात नहीं। कविवर मैथिलीशरण गुप्त तो मनुष्य उसी को मानते हैं जो मनुष्य के हित प्राण तक न्यौछावर कर दे। यथा-

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप, आप ही चरे। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

आर्य समाज के संस्थापक देव दयानन्द का चिन्तन इससे आगे तक जाता है। मनुष्य का यह हित साधन मनुष्य तक ही सीमित क्यों रहे, प्राणीमात्र तक क्यों न जाएं? प्राणीमात्र ही नहीं, महर्षि तो जड़-चेतन सभी का हित चाहने वाले थे। वे तो ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' की भावना से प्रभावित थे। तभी तो उन्होंने लिखा था कि ''मनुष्य उसी को कहना जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझें।'' अतः 24 जून 1877 को आर्य समाज, लाहौर की स्थापना के अनन्तर वर्तमान दस नियमों में आर्य समाज के मुख्य उद्देश्य को बदल दिया। अब संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य हो गया। यद्यपि मुम्बई वाले नियम भी कोई संकुचित और संकीर्ण नहीं थे, पर लाहौर वाले वर्तमान नियम और भी उदार और व्यापक उद्देश्य लिए हुए हैं। छठे नियम में इसके उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है, जो इस प्रकार है- ''संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।''

मुम्बई में रजिस्ट्रार को दिये घोषणा पत्र वाले उद्देश्य अर्थात संसार में वेद का प्रचार करना, जो इसको परम धर्म का रूप देकर तीसरे नियम में प्रकट कर दिया। यथा-''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'' वेद का प्रचार पढ़ाने और सुनाने से ही तो होगा, पर पढ़ा और सुना वही सकता है जो प्रथम स्वयं पढ़े और सुनेगा। इसलिए वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म घोषित कर दिया। जहाँ तक संसार के उपकार की बात है, संसार को वेदभार्ग पर आरूढ़ करने से बढ़कर भी संसार का उपकार हो सकता है, यह बात सोची भी नहीं जा सकती। संसार का उपकार यही है कि उसे सीधे-सच्चे निष्कण्टक वेदमार्ग का पथिक बना दिया जाये, तभी आर्य समाज का उद्देश्य पूर्ण होगा। आर्य समाज के उद्देश्य और भी हैं, पर संक्षेप में इतना ही।

- यशपाल आर्य 'बन्धु'
चन्द्र नगर, मुरादाबाद-244032

नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा वि.सं. 2072 पर विशेष

भारतीय नव सम्वत्सर का पर्व

भारतीय नव संवत्सर विक्रमी, भारत के महान सम्राट महाराज विक्रमादित्य के राज्याभिषेक चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को आर्य जाति विशेष पर्व के रूप में मनाती आ रही है। इस पर्व की महत्ता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. श्रीमती उमा शशि दुर्गा जी द्वारा लिखित एवं पूर्व प्रकाशित लेख जो नव संवत्सर के अवसर पर सब आर्यजनों के संज्ञान हेतु पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। - सम्पादक

हम भारतीयों के नववर्ष विक्रम सम्वत् का शुभारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। भारतीय परम्परा के अनुसार इस बार 21 मार्च 2015 को नव सम्वत्सर 2072 का मंगलमय दिन है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह दिन सृष्टि संवत्, वैवस्वतादि मन्वन्तर, चारों युगादि, कृत संवत, युधिष्ठिर संवत् आदि के आरम्भ के कारण भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रन्थ हिमाद्रि के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत की रचना की थी। ब्रह्मपुराण में स्पष्टतया उल्लेख किया गया है।

''चैत्र मसि जगद् ब्रह्मा सराजं प्रथमेऽहीन।''

सृष्टि का प्रथम सूर्योदय चैत्र सुदि प्रतिपदा व मेष संक्रान्ति और काल के विभाग वर्ष, ऋतु, अयन, मास, पक्ष, दिन, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न और पल के साथ प्रारम्भ हुए। 'सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थ में भी इसी आशय का उल्लेख मिलता है- आदित्यवार में चैत्र मास शुक्ल पक्ष के आरम्भ में दिन, मास, वर्ष, युग एक साथ आरम्भ हुए। इसी कारण इस दिन के महत्त्व को देखते हुए भारतवर्ष में कई संवत् चैत्र प्रतिपदा से आरम्भ किए गए।

विक्रम संवत् से पूर्व अनेक संवत् प्रचलन में रहे हैं जिनमें सप्तर्षि संवत, कलियुग संवत, बुद्ध निर्वाण संवत, वीर निर्वाण संवत्, मौर्य निर्वाण संवत्, आदि उल्लेखनीय हैं। सप्तर्षि संवत्, वीर निर्वाण संवत का प्रचलन कश्मीर क्षेत्र में होता रहा है। ज्योति विद्वान की कल्पना के अनुसार आकाश में स्थित सप्तर्षि तारकापुंज की अपनी गति विद्यमान रहती है। समस्त नक्षत्र मंडल का भ्रमण पूर्ण करने के लिए उन्हें 2700 साल लगते हैं। इस कालावधि को 'सप्तर्षि चक्र' कहते हैं। सप्तर्षि काल एवं शक का निर्देश पौराणिक साहित्य में प्राप्त होता है। इस शक को 'शक काल' एवं लौकिक काल नामान्तर भी प्राप्त थे। कश्मीर के ज्योतिर्विदों के अनुसार कालिवर्ष 27 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन इस शक का आरम्भ हुआ था। कश्मीर इस दिन को 'नवरह' के रूप में मानते हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के इस शुभदिन को नववर्ष के रूप में मनाना अत्यन्त वैज्ञानिक है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इस कारण सूर्य कभी भूमण्डल रेखा के उत्तर में तो कभी दक्षिण में

.....शेष पेज 6 पर

पृष्ठ 5 का शेष

भारतीय...

विद्यमान रहता है। किन्तु वसन्त ऋतु के द्वितीय मास चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सूर्य भूमध्य रेखा पर होता है। सृष्टि का वातावरण समशीतोष्ण होता है। समशीतोष्ण के कारण वात, पित्त और कफ के दोष समान होते हैं। आयुर्वेद के अनुसार मानव के अस्वस्थ होने का सर्वप्रमुख कारण इन त्रिदोषों की विषमता ही है। अत: स्पष्ट है कि इस दिन पृथ्वी पर कहीं विषमता लक्षित नहीं होती इसीलिए हमारे अनुपम वैज्ञानिक पूर्वजों में संवत्सर पर सृष्टि में 'हर्ष, उल्लास, उमंग का आना स्वाभाविक है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रकृति नवचेतना और स्फूर्ति से भरपूर होती है। वैसे भी यह दिन भारतीय संस्कृति में उत्सवों की श्रृंखला लेकर आता है। विक्रम किसी सम्प्रदाय विशेष का संवत् नहीं है' मातृभूमि को विदेशियों से मुक्त करने वाले वीर राजा विक्रमादित्य के नाम से प्रचलित यह संवत् सम्पूर्ण राष्ट्र की चेतना को अपने भीतर समेटता है।

इसी दिन शकारि विक्रमादित्य ने अपनी मातृभूमि को शत्रुओं के चंगुल से मुक्त करवा कर विजयोत्सव मनाया तथा राष्ट्रीय महत्त्व की स्थापना करते हुए एक संवत् का प्रचलन किया जिसे कालान्तर में 'विक्रम संवत्' के नाम से जाना जाने लगा। विक्रम संवत् बहुमान्य है और लगभग सम्पूर्ण भारत में विभिन्न समुदायों द्वारा अपने-अपने ढंग से मनाया जाता है। शताब्दियों से सिन्धी समुदाय चैत्र शुक्ल द्वितीया पर 'चेटीचंड महोत्सव' अत्यन्त उमंग एवं श्रद्धा से मनाता है। इस दिन भी झूलेलाल जी की जयन्ती मनाई जाती है। श्री झूलेलाल जी का जन्म विक्रम संवत 1007 (सन् 651) में चैत्र शुक्ल द्वितीया को शुक्रवार के दिन हुआ था। श्री झूलेलाल जी को जलदेवता 'वरुण' का अवतार माना जाता है। सिन्धी समुदाय के इष्ट श्री झूलेलाल जी की स्मृति में आयोजित चेरी चण्ड महोत्सव से भारत की प्राचीन सिन्धु घाटी की सभ्यता की स्मृति हो जाती है। महाराष्ट्र की जनता विक्रम संवत् के प्रथम दिवस को गुड़ी पड़वा के नाम से आयोजित करती है। इस पर्व पर वहां के लोग सुन्दर वस्त्र धारण करके, स्वादिष्ट व्यंजनों का आदान-प्रदान करके परस्पर प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं। आन्ध्र प्रदेश के निवासी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को 'उगाडी' के रूप में मनाते हैं। यह हमारे वैज्ञानिक पूर्वजों के 'युगादि' शब्द का ही रूपान्तरण है। महर्षि वाल्मीकि ने 'रामायण' में श्री रामचन्द जी के राजतिलक के लिए इसी दिन का उल्लेख किया है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के राज्याभिषेक के लिए विशिष्ट दिन का चुनाव निश्चित था। इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से विशिष्ट संवत् और कोई दिन नहीं हो सकता था। विक्रम संवत् को 'वरुण पुंज', 'चैत्री चंद', 'गुड़ी पड़वा' तथा 'उगाडी' महोत्सव के अतिरिक्त आर्य समाज स्थापना दिवस होने का श्रेय भी प्राप्त है। विक्रम संवत् की श्रेष्ठता, वैज्ञानिकता तथा पवित्रता को अनुभव करके ही युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सन् 1875 के इस शुभ दिन में आर्य समाज की स्थापना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। आर्य समाज की स्थापना के माध्यम से महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र में व्याप्त समस्त अन्धकार व अनाचार को मिटाने का संकल्प लिया था। आर्य समाज के दस नियम सम्पूर्ण समाज को समुचित दिशा देने में अग्रणी हैं। वैदिक संस्कृति के उन्नायक महर्षि दयानन्द के अनुयायी तथा आर्य समाज का विशाल जनसमुदाय नवसंवत्सर को अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाता है। वे लोग इस दिन घर-घर में, छोटी बड़ी संस्थाओं में यज्ञ-हवन सम्पन्न करके वायुमंडल को सुरक्षित करते हैं। बाह्य पर्यावरण के अतिरिक्त वैदिक मन्त्रों के उच्चारण द्वारा मानसिक पर्यावरण को भी शुद्ध करके नए-नए संकल्प लिए जाते हैं।

अभिप्राय यह है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह दिन सदविचारों का संकल्प करने के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। वस्तुत: केवल भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के अन्य देश आज भी किसी न किसी रूप में इस दिवस की महत्ता को समझते हैं। ईराक आदि देश सूर्य के भूमध्य रेखा पर आने से 'नौरोज' नामक पर्व मनाते हैं। यह पर्व लगभग बारह दिन तक चलता है। पूर्व काल में बेबीलोन में यह त्यौहार बसंत ऋतु के बाद की अमावस को ग्यारह दिनों तक मनाए जाने की परम्परा रही है। ईरान में 21 मार्च के आसपास इस उत्सव को आयोजित किया जाता रहा है। बर्मा में 'तिजान' नाम से इस नववर्ष को तीन दिनों तक मनाया जाता रहा है। विश्व के प्रसिद्ध धर्मों में यहूदी मत का विशिष्ट स्थान है, येरुसलम में 'यहूदी पास्का' नामक उत्सव वसन्त की प्रथम पूर्णिमा के दिन अत्यन्त उत्साह से मनाते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को प्रारम्भ होने वाला नवसंवत्सर सारे विश्व में अपने गौरव को स्थापित कर चुका है तो हम भारतीय नववर्ष के पहले दिन के रूप में इसे क्यों नहीं मनाते? क्या कारण है कि आज भी भारत के अधिकांश लोग अंग्रेजों के नववर्ष पहली जनवरी को उन्मादित होकर मनाते हैं? माना कि हमारी संस्कृति अपने पराए का भेद नहीं करती, फिर भी पहली जनवरी और नवसंवत्सर में भेद हमें विवेक पूर्वक करना अपेक्षित है। भारत के संचार माध्यमों में पहली जनवरी को नववर्ष का स्वागत करने में होड़ सी मच जाती है। उस नववर्ष के लिए अनेक सांस्कृतिक और रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो हमारी परम्परा और संस्कृति के अनुरूप नहीं है किन्तु वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, पाणिनी कृत अष्टाध्यायी, ज्योतिष ग्रन्थ हिमादि, भास्कराचार्य कृत सिद्धान्त शिरोमणि, सूर्य सिद्धान्त, मनुस्मृति तथा महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्य जिस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन का गौरव स्थापित करते हैं। वह उपेक्षित अनजाना सा व्यतीत हो जाता है। संचार के मुद्रित माध्यम हिन्दी में प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्र या पत्रिकाएं कभी थोड़ा बहुत स्मरण करके इस महत्त्वपूर्ण दिन के प्रति अपना दायित्व पूरा कर लेते हैं। अंग्रेजी पत्र पत्रिकाएं तो नवसंवत्सर का जनसंचार करने में प्राय: मौन ही रहती हैं। हमारी संस्कृति आशावादी है। हमें निराश नहीं होना है। आइए, जागें! नए प्रभात की कल्पना करें - इस बार करवट बदलने का संकल्प लें और नवसंवत्सर की गरिमा को पहचाने। पाश्चात्य रंग में रंगी हुई बाल किशोर और युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परम्परा का कल्याणकारी रंग प्रदान करें जिससे उसका मार्ग प्रशस्त हो सके। नव संवत्सर 2072 पूरे विश्व के लिए सुखद एवं मंगलमय हो। इसी कामना के साथ विक्रम संवत् का हार्दिक अभिनन्दन।

- डॉ. उमा शशि दुर्गा
पूर्व प्रो. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि

प्रेरक प्रसंग — फलित ज्योतिष पर व्यंग्य

1935 ई. में क्वेटा (बलोचिस्तान) में एक भीषण भूकम्प आया था। इसमें शहस्त्रों व्यक्ति मारे गये थे। इस भूकम्प से कुछ समय पूर्व क्वेटा से एक 23 वर्षीय देवी ने श्री महात्मा नारायण स्वामीजी को एक पत्र लिखा। उस देवी को किसी ज्योतिषी ने यह स्वामी जी को एक पत्र लिखा। उस देवी को किसी ज्योतिषी ने यह बतलाया था कि वह एक वर्ष के भीतर मर जाएगी। उस देवी ने महात्माजी से यह पूछा था कि क्या सचमुच वह एक वर्ष के भीतर मर जाएगी। पत्र पढ़कर महात्मा जी के अन्त:करण में यह ईश्वरीय प्रेरणा हुई कि उसे लिख दें कि वह नहीं मरेगी। महात्मा ने दिल्ली से उसे लिख दिया कि वह चिन्ता न करें। भूकम्प से पूर्व महात्मा जी क्वेटा गये। वह देवी अपने पति के साथ श्री महाराज के दर्शन करने पहुँची और पुन: वही प्रश्न किया। अभी ज्योतिषीजी की बतलाई अवधि पूरी नहीं हुई थी। उसका चेहरा मुझाया हुआ था। महात्मा जी ने पुन: बलपूर्वक कहा कि वह कोई चिन्ता न करे। वह नहीं मरेगी। उसका चेहरा खिल उठा। उसे बड़ी सान्तवना मिली। क्वेटा का भूकम्प आया। इसमें शहस्त्रों मनुष्य कीट-पतंग की भांति मर गये। क्वेटा के भव्य-भवन भूमि पर बिछ गये। सारा संसार क्वेटा के भूकंप की दिल दहला देने वाली कहानियां सुनकर कांप उठा। इस भूकंप से पूर्व ही ज्योतिषीजी का बतलाया हुआ समय एक वर्ष पूरा हो गया। भूकंप के पश्चात उस देवी का महात्माजी को पत्र प्राप्त हुआ कि वह ज्योतिषीय के बतलाये हुए समय के भीतर नहीं मरी और विनाशकारी भूकंप में कितने प्राणी मर गये हैं, कितनों को चोटें आई हैं- इसमें भी वह बच गई है। महात्माजी ने पत्र पाकर देवीजी को उस ज्योतिषि के प्रहार से बचने पर बधाई दी और ईश्वर को अनेक धन्यवाद दिये, जिसकी कृपा से मेरे अंत:करण ने मुझे शुद्ध प्रेरणा की। न जाने ऐसी अनर्गल भविष्यवाणियां करके ज्योतिषी लोग कितने जनों को ठग लेते है और कितनों का अहित करते हैं।

-साभार
'तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी' से

मदर टेरेसा - सेवा बनाम धर्मान्तरण

मदर टरेसा एक ऐसी व्यक्तित्व शालिनी महिला है, विदेशी मूल की होते हुए भारत में ईसाई मिशनरियों का प्रतिनिधित्व ही नहीं किया अपितु भारत के दूर-दराज तथा आदिवासी क्षेत्रों में पूर्ण मनो योग से हिन्दूओं को ईसाई मत में परिवर्तित किया और हमारी तत्कालिक सरकार ने आंखों पर पट्टी बांधकर उस महिला को शांतिदूत के नाम से भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया और उस पक्ष के शिरोमणि संस्था ने तो नोबेल पुरस्कार भी प्रदान किया। लेकिन आज यदि कोई हिंन्दूसंगठन आर्यजन अपने बिछड़े भाइयों को पुनः उनके घर में वापिसी कराएं तो धर्म निरपेक्ष की चादर ओढ़ रही सरकार उनको जेल में डालकर स्वयं पर गर्व महसूस करती है परंतु यह तुष्टीकरण की भावना भारत वर्ष के लिए बहुत घातक है। इसी तथ्य को स्पष्ट करने के लिए डा. विवेक आर्य द्वारा प्रेषित लेख आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है। **- सम्पादक**

संघ प्रमुख मोहन भागवत का मदर टेरेसा पर दिया गया बयान कि मदर टेरेसा द्वारा सेवा की आड़ में धर्मान्तरण करना सेवा के मूल उद्देश्य से भटकना है पर ईसाई समाज द्वारा प्रतिक्रिया तो स्वाभाविक रूप से होनी ही थी मगर तथाकथित सेक्यूलर सोच वाले लोग भी संघ प्रमुख के बयान पर माफी मांगने की वकालत कर रहे है एवं इस बयान को मदर टेरेसा का अपमान बता रहे है। निष्पक्ष रूप से यह विरोध चोरी तो चोरी सीनाजोरी भी है। मानवता की सच्ची सेवा में प्रलोभन, लोभ, लालच, भय, दबाव से लेकर धर्मान्तरण का कोई स्थान नहीं है। इससे तो यही सिद्ध हुआ कि जो भी सेवा कार्य मिशनरी द्वारा किया जा रहा है उसके मूल उद्देश्य ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। संत वही होता है जो पक्षपात रहित एवं जिसका उद्देश्य मानवता की भलाई है। ईसाई मिशनरियों का पक्षपात इसी से समझ में आता है कि वह केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहती है जो ईसाई मत को ग्रहण कर ले। विडंबना यह है कि ईसाईयों को पक्षपात रहित होकर सेवा करने का सन्देश देने के स्थान पर मीडिया संघ प्रमुख की आलोचना अधिक प्रचारित कर रहा है।

हमारे देश के संभवतः शायद ही कोई चिंतक ऐसे हुए हो जिन्होंने प्रलोभन द्वारा धर्मान्तरण करने की निंदा न की हो। महान चिंतक स्वामी दयानंद का एक ईसाई पादरी से शास्त्रार्थ हो रहा था। स्वामी जी ने पादरी से कहा की हिन्दुओं का धर्मांतरण करने के तीन तरीके है। पहला जैसा मुसलमानों के राज में गर्दन पर तलवार रखकर जोर जबरदस्ती से बनाया जाता था। दूसरा था, भूकम्प, प्लेग आदि प्राकृतिक आपदा जिसमें हजारों लोग निराश्रित होकर ईसाईयों द्वारा संचालित अनाथाश्रम एवं विधवाश्रम आदि में लोभ-प्रलोभन के चलते भर्ती हो जाते थे और इस कारण से आप लोग प्राकृतिक आपदाओं के देश पर बार बार आने की अपने ईश्वर से प्रार्थना करते है और तीसरा बाइबिल की शिक्षाओं के जोर शोर से प्रचार-प्रसार करके। मेरे विचार से इन तीनों में सबसे उचित अंतिम तरीका मानता हूँ। स्वामी दयानंद की स्पष्टवादिता सुनकर पादरी के मुख से कोई शब्द न निकला। स्वामी जी ने कुछ ही पंक्तियों में धर्मान्तरण के कुचक्र का पर्दाफाश कर दिया। स्वामी जी ईसाई प्रचारकों द्वारा हिन्दू देवी देवताओं की निंदा करने के सख्त आलोचक थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ईसाई धर्मान्तरण के सबसे बड़े आलोचको में से एक थे। अपनी आत्मकथा में महात्मा गांधी लिखते है उन दिनों ईसाई मिशनरी हाई स्कूल के पास नुक्कड़ पर खड़े हो हिन्दुओं तथा देवी देवताओं पर गालियां उड़ेलते हुए अपने मत का प्रचार करते थे। यह भी सुना है की एक नया कन्वर्ट (मतांतरित) अपने पूर्वजों के धर्म को, उनके रहन-सहन को तथा उनको गालियां देने लगता है। इन सबसे मुझमें ईसाइयत के प्रति नापसंदगी पैदा हो गई। इतना ही नहीं गांधी जी से मई, 1935 में एक ईसाई मिशनरी नर्स ने पूछा कि क्या आप मिशनरियों के भारत आगमन पर रोक लगाना चाहते है तो जवाब में गांधी जी ने कहा था, अगर सत्ता मेरे हाथ में हो और मैं कानून बना सकूं तो मैं मतांतरण का यह सारा धंधा ही बंद करा दूँ। मिशनरियों के प्रवेश से उन हिन्दू परिवारों में जहाँ मिशनरी बैठे है, वेशभूषा, रीतिरिवाज एवं खानपान तक में अंतर आ गया है।

समाज सुधारक एवं देशभक्त लाला लाजपत राय द्वारा प्राकृतिक आपदाओं में अनाथ बच्चों एवं विधवा स्त्रियों को मिशनरी द्वारा धर्मान्तरित करने का पुरजोर विरोध किया गया जिसके कारण यह मामला अदालत तक पहुंच गया। ईसाई मिशनरी द्वारा किये गए कोर्ट केस में लाला जी की विजय हुई एवं एक आयोग के माध्यम से लाला जी ने यह प्रस्ताव पास करवाया कि जब तक कोई भी स्थानीय संस्था निराश्रितों को आश्रय देने से मना न कर दे तब तक ईसाई मिशनरी उन्हें अपना नहीं सकती।

समाज सुधारक डॉ अम्बेडकर को ईसाई समाज द्वारा अनेक प्रलोभन ईसाई मत अपनाने के लिए दिए गए मगर यह जमीनी हकीकत से परिचित थे। ईसाई मत ग्रहण कर लेने से भी दलित समाज अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित ही रहेगा। डॉ आंबेडकर का चिंतन कितना व्यावहारिक था यह आज देखने को मिलता है। 22 जनवरी 1988 में अपनी वार्षिक बैठक में तमिलनाडु के बिशपों ने इस बात पर ध्यान दिया कि धर्मांतरण के बाद भी अनुसूचित जाति के ईसाई परंपरागत अछूत प्रथा से उत्पन्न सामाजिक व शैक्षिक और आर्थिक अति पिछड़ेपन का शिकार बने हुए हैं। फरवरी 1988 में जारी एक भावपूर्ण पत्र में तमिलनाडु के कैथलिक बिशपों ने स्वीकार किया कि जातिगत विभेद और उनके परिणामस्वरूप होने वाला अन्याय और हिंसा ईसाई सामाजिक जीवन और व्यवहार में अब भी जारी है। हम इस स्थिति को जानते हैं और गहरी पीड़ा के साथ इसे स्वीकार करते हैं। भारतीय चर्च अब यह स्वीकार करता है कि एक करोड़ 90 लाख भारतीय ईसाइयों का लगभग 60 प्रतिशत भाग भेदभावपूर्ण व्यवहार का शिकार है। उसके साथ दूसरे दर्जे के ईसाई जैसा अथवा उससे भी बुरा व्यवहार किया जाता है। दक्षिण में अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों को अपनी बस्तियों तथा गिरिजाघर दोनों जगह अलग रखा जाता है। उनकी बस्ती मुख्य बस्ती से कुछ दूरी पर होती है और दूसरों को उपलब्ध नागरिक सुविधओं से वंचित रखी जाती है। चर्च में उन्हें दाहिनी ओर अलग कर दिया जाता है। उपासना (सर्विस) के समय उन्हें पवित्र पाठ पढ़ने की अथवा पादरी की सहायता करने की अनुमति नहीं होती। बपतिस्मा, दृढ़िकरण अथवा विवाह संस्कार के समय उनकी बारी सबसे बाद में आती है। नीची जातियों से ईसाई बनने वालों के विवाह और अंतिम संस्कार के जुलूस मुख्य बस्ती के मार्गों से नहीं गुजर सकते। अनुसूचित जातियों से ईसाई बनने वालों के कब्रिस्तान अलग हैं। उनके मृतकों के लिए गिरजाघर की घंटियां नहीं बजतीं, न ही अंतिम प्रार्थना के लिए पादरी मृतक के घर जाता है। अंतिम संस्कार के लिए शव को गिरजाघर के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। स्पष्ट है कि उच्च जाति और निम्न जाति के ईसाइयों के बीच अंतर्विवाह नहीं होते और अंतर्भोज भी नगण्य हैं। उनके बीच झड़पें आम हैं। नीची जाति के ईसाई अपनी स्थिति सुधारने के लिए संघर्ष छेड़ रहे हैं, गिरजाघर अनुकूल प्रतिक्रिया भी कर रहा है लेकिन अब तक कोई सार्थक बदलाव नहीं आया है। ऊंची जाति के ईसाइयों में भी जातिगत मूल याद किए जाते हैं और प्रछन्न रूप से ही सही लेकिन सामाजिक संबंधों में उनका रंग दिखाई देता है।

महान विचारक वीर सावरकर धर्मान्तरण को राष्ट्रान्तरण मानते थे। आप कहते थे यदि कोई व्यक्ति धर्मान्तरण करके ईसाई या मुसलमान बन जाता है तो फिर उसकी आस्था भारत में न रहकर उस देश के तीर्थ स्थलों में हो जाती है जहाँ के धर्म में वह आस्था रखता है, इसलिए धर्मान्तरण यानी राष्ट्रान्तरण है। इस प्रकार से प्राय सभी देशभक्त नेता ईसाई धर्मान्तरण के विरोधी रहे है एवं उसे राष्ट्र एवं समाज के लिए हानिकारक मानते है। मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कोप्जे, मेसेडोनिया में हुआ था और बारह वर्ष की आयु में उन्हें अहसास हुआ कि ''उन्हें ईश्वर बुला रहा है''। 24 मई 1931 को वे कलकत्ता आई और फिर यहीं की होकर रह गईं। उन पर हमेशा वेटिकन की मदद और मिशनरीज ऑफ चौरिटी की मदद से ''धर्म परिवर्तन'' का आरोप तो लगता ही रहा है, लेकिन बात कुछ और भी है, जो उन्हें ''दया की मूर्ति'', ''मानवता की सेविका'', ''बेसहारा और गरीबों की मसीहा आदि वाली ''लार्जर दैन लाईफ'' वाली छवि पर ग्रहण लगाती हैं और मजे की बात यह है कि इनमें से अधिकतर आरोप पश्चिम की प्रेस या ईसाई पत्रकारों आदि ने ही किये हैं, न कि किसी हिन्दू संगठन ने, जिससे संदेह और भी गहरा हो जाता है (क्योंकि हिन्दू संगठन जो भी बोलते या लिखते हैं उसे तत्काल सांप्रदायिक ठहरा दिये जाने का ''फैशन'' है। अपने देश के गरीब ईसाईयों की सेवा करने के स्थान पर मदर टेरेसा को भारत के गरीब गैर ईसाईयों के उत्थान में रूचि क्या ईशारा करती है आप स्वयं समझ सकते है।

कोलकाता आने पर धन की उगाही करने के लिए मदर टेरेसा ने अपनी मार्केटिंग आरम्भ करी। उन्होंने कोलकाता को गरीबों का शहर के रूप में चर्चित कर और खुद को उनकी सेवा करने वाली के रूप में चर्चित कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। मदर टेरेसा को समूचे विश्व से, कई ज्ञात और अज्ञात स्त्रोतों से बड़ी-बड़ी धनराशियाँ दान के तौर पर मिलती थी। सबसे बड़ी बात यह थी की मदर ने कभी इस विषय में सोचने का कष्ट नहीं किया की उनके धनदाता की आय का स्त्रोत एवं प्रतिष्ठा कैसी थी।

उदहारण के लिए अमेरिका के एक बड़े प्रकाशक रॉबर्ट मैक्सवैल, जिन्होंने कर्मचारियों की भविष्यनिधि फण्ड्स में 450 मिलियन पाउंड का घोटाला किया, उसने मदर टेरेसा को 1.25 मिलियन डालर का चन्दा दिया। मदर टेरेसा मैक्सवैल के भूतकाल को जानती थीं।

हैती के तानाशाह जीन क्लाऊड डुवालिये ने मदर टेरेसा को सम्मानित करने बुलाया। मदर टेरेसा कोलकाता से हैती सम्मान लेने गईं, और जिस व्यक्ति ने हैती का भविष्य बिगाड़ कर रख दिया, गरीबों पर जमकर अत्याचार किये और देश को लूटा, टेरेसा ने उसकी ''गरीबों को प्यार करने वाला'' कहकर तारीफों के पुल बाँधे। मदर टेरेसा को चार्ल्स कीटिंग से 1.25 मिलियन डालर का चन्दा मिला, ये कीटिंग महाशय वही हैं जिन्होंने ''कीटिंग सेविंग्स एन्ड लोन्स'' नामक

....शेष पेज 8 पर

पृष्ठ 7 का शेष

मदर टेरेसा ....

कम्पनी 1980 में बनाई थी और आम जनता और मध्यमवर्ग को लाखों डालर का चूना लगाने के बाद उसे जेल हुई थी। अदालत में सुनवाई के दौरान मदर टेरेसा ने जज से कीटिंग को माफकरने की अपील की थी, उस वक्त जज ने उनसे कहा कि जो पैसा कीटिंग ने गबन किया है क्या वे उसे जनता को लौटा सकती हैं? ताकि निम्न-मध्यमवर्ग के हजारों लोगों को कुछ राहत मिल सके, लेकिन तब वे चुप्पी साध गईं।

यह दान किस स्तर तक था इसे जानने के लिए यह पढ़िए। मदर टेरेसा की मृत्यु के समय सुसान शील्ड्स को न्यूयॉर्क बैंक में पचास मिलियन डालर की रकम जमा मिली, सुसान शील्ड्स वही हैं जिन्होंने मदर टेरेसा के साथ सहायक के रूप में नौ साल तक काम किया, सुसान ही चैरिटी में आये हुए दान और चेकों का हिसाब-किताब रखती थीं। जो लाखों रुपया गरीबों और दीन-हीनों की सेवा में लगाया जाना था, वह न्यूयॉर्क के बैंक में यूँ ही फालतू पड़ा था?

दान से मिलने वाले पैसे का प्रयोग सेवा कार्य में शायद ही होता होगा कोलकाता में रहने वाले अरूप चटर्जी की पुस्तक द फाइनल वर्डिक्ट पढ़िए। लेखक लिखते हैं ब्रिटेन की प्रसिद्ध मेडिकल पत्रिका **Lancet** के सम्पादक डॉ.रॉबिन फॉक्स ने 1991 में एक बार मदर के कलकत्ता स्थित चैरिटी अस्पतालों का दौरा किया था। उन्होंने पाया कि बच्चों के लिये साधारण ''अनल्जेसिक दवाइयां'' तक वहाँ उपलब्ध नहीं थीं और न ही ''स्टर्लाइज्ड सिरिंज'' का उपयोग हो रहा था। जब इस बारे में मदर से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि ''ये बच्चे सिर्फ मेरी प्रार्थना से ही ठीक हो जायेंगे। मिशनरी में भर्ती हुए आश्रितों की हालत भी इतने धन मिलने के उपरांत भी कोई बेहतर नहीं थी। मिशनरी की नन दूसरो के लिए दवा से अधिक प्रार्थना में विश्वास रखती थी जबकि खुद कोलकाता के महंगे से महंगे अस्पताल में ईलाज कराती थी। मिशनरी की एम्बुलेंस मरीजों से अधिक नन आदि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करती थी। यही कारण था की मदर टेरेसा की मृत्यु के समय कोलकाता निवासी उनकी शवयात्रा में न के बराबर शामिल हुए थे।

मदर टेरेसा अपने रूढ़िवादी विचारों के लिए सदा चर्चित रही। बांग्लादेश युद्ध के दौरान लगभग साढ़े चार लाख महिलायें बेघरबार हुईं और भागकर कोलकाता आईं, उनमें से अधिकतर के साथ बलात्कार हुआ था। मदर टेरेसा ने उन महिलाओं के गर्भपात का विरोध किया था, और कहा था कि ''गर्भपात कैथोलिक परम्पराओं के खिलाफ है और इन औरतों की प्रेग्नेन्सी एक ''पवित्र आशीर्वाद'' है। मदर टेरेसा ने इन्दिरा गाँधी की आपातकाल लगाने के लिये तारीफ की थी और कहा कि ''आपातकाल लगाने से लोग खुश हो गये हैं और बेरोजगारी की समस्या हल हो गई है''।

गाँधी परिवार ने उन्हें इस बधाई के लिए ''भारत रत्न'' का सम्मान देकर उनका ''ऋण'' उतारा। भोपाल गैस त्रासदी भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना है, जिसमें सरकारी तौर पर 4000 से अधिक लोग मारे गये और लाखों लोग अन्य बीमारियों से प्रभावित हुए। उस वक्त मदर टेरेसा ताबड़तोड़ कलकत्ता से भोपाल आईं, किसलिये? क्या प्रभावितों की मदद करने? जी नहीं, बल्कि यह अनुरोध करने कि यूनियन कार्बाईड के मैनेजमेंट को माफ कर दिया जाना चाहिये और अन्तत: वही हुआ भी, वारेन एंडरसन ने अपनी बाकी की जिन्दगी अमेरिका में आराम से बिताई, भारत सरकार हमेशा की तरह किसी को सजा दिलवा पाना तो दूर, ठीक से मुकदमा तक नहीं कायम कर पाई।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार क्रिस्टोऊफर हिचेन्स ने 1994 में एक डॉक्यूमेंट्री बनाई थी जिसमें मदर टेरेसा के सभी क्रियाकलापों पर विस्तार से रोशनी डाली गई थी, बाद में यह फिल्म ब्रिटेन के चैनल-फोर पर प्रदर्शित हुई और इसने काफी लोकप्रियता अर्जित की। बाद में अपने कोलकाता प्रवास के अनुभव पर उन्होंने एक किताब भी लिखी ''हैल्स एन्जेल'' (नर्क की परी)। इसमें उन्होंने कहा है कि ''कैथोलिक समुदाय विश्व का सबसे ताकतवर समुदाय है, जिन्हें पोप नियंत्रित करते हैं, चैरिटी चलाना, मिशनरियाँ चलाना, धर्म परिवर्तन आदि इनके मुख्य काम है''। जाहिर है कि मदर टेरेसा को टेम्पलटन सम्मान, नोबल सम्मान, मानद अमेरिकी नागरिकता जैसे कई सम्मान मिले।

ईसाइयों के लिए यही मदर टेरेसा दिल्ली में 1994 में दलित ईसाइयों के आरक्षण की हिमायत करने के लिए धरने पर बैठी थी। तब तत्कालीन मंत्री सुषमा स्वराज ने उनसें पूछा था की क्या मदर दलित ईसाई जैसे उद्बोधनों के रूप में चर्च में जातिवाद का प्रवेश करवाना चाहती है। महाराष्ट्र में 1947 में देश आजाद होते समय अनेक मिशन के चर्चों को आर्यसमाज ने खरीद लिया क्योंकि उनका संचालन करने वाले ईसाई इंग्लैंड लौट गए थे। कुछ दशकों के पश्चात् ईसाइयों ने उस संपत्ति को दोबारा से आर्यसमाज से खरीदने का दबाव बनाया। आर्यसमाज के अधिकारियों द्वारा मना करने पर मदर टेरेसा द्वारा आर्यसमाज के पदाधिकारियों को देख लेने की धमकी दी गई थी। कमाल की संत थी। मदर टेरेसा जब कभी बीमार हुईं, उन्हें बेहतरीन से बेहतरीन कार्पोरेट अस्पताल में भरती किया गया, उन्हें हमेशा महंगा से महंगा इलाज उपलब्ध करवाया गया। यही उपचार यदि वे अनाथ और गरीब बच्चों (जिनके नाम पर उन्हें लाखों डालर का चन्दा मिलता रहा) को भी दिलवातीं तो कोई बात होती, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। एक बार कैंसर से कराहते एक मरीज से उन्होंने कहा कि ''तुम्हारा दर्द ठीक वैसा ही है जैसा ईसा मसीह को सूली पर हुआ था, शायद महान मसीह तुम्हें चूम रहे हैं। तब मरीज ने कहा कि ''प्रार्थना कीजिये कि जल्दी से ईसा मुझे चूमना बन्द करें''। आगे पाठक स्वयं समझदार है।

मदर टेरेसा की मृत्यु के पश्चात भी चंदा उगाही का कार्य चलता रहे और धर्मान्तरण करने में सहायता मिले इसके लिए एक नया ड्रामा रचा गया। पोप जॉन पॉल को मदर को ''सन्त'' घोषित करने में जल्दबाजी की गई। सामान्य रूप से संत घोषित करने के लिये जो पाँच वर्ष का समय (चमत्कार और पवित्र असर के लिये) दरकार होता है, पोप ने उसमें भी ढील दे दी। पश्चिम बंगाल की एक क्रिश्चियन आदिवासी महिला जिसका नाम मोनिका बेसरा है, उसे टीबी और पेट में ट्यूमर हो गया था। बेलूरघाट के सरकारी अस्पताल के डॉ. रंजन मुस्ताफ उसका इलाज कर रहे थे। उनके इलाज से मोनिका को काफी फायदा हो रहा था और एक बीमारी लगभग ठीक हो गई थी। अचानक एक दिन मोनिका बेसरा ने अपने लॉकेट में मदर टेरेसा की तस्वीर देखी और उसका ट्यूमर पूरी तरह से ठीक हो गया। मिशनरी द्वारा मोनिका बेसरा के ठीक होने को चमत्कार एवं मदर टेरेसा को संत के रूप में प्रचारित करने का बहाना मिल गया। यह चमत्कार का दावा हमारी समझ से परे हैं की एक ओर जीवन में अनेक बार मदर टेरेसा को चिकित्सकों की आवश्यकता पड़ी और उन्हीं मदर टेरेसा की कृपा से ईसाई समाज उनके नाम से प्रार्थना करने वालो को बिना दवा केवल दुआ से चमत्कार द्वारा ठीक होना मानता है। अगर कोई हिन्दू बाबा चमत्कार द्वारा किसी रोगी के ठीक होने का दावा करता है तो सेक्यूलर लेखक उस पर खूब चुस्कियां लेते है मगर जब पढ़ा लिखा ईसाई समाज ईसा मसीह से लेकर अन्य ईसाई मिशनरियों द्वारा चमत्कार होने एवं उससे सम्बंधित मिशनरी को संत घोषित करने का महिमा मंडन करता है तो उसे कोई भी सेक्यूलर लेखक दबी जुबान में भी इस तमाशे को अन्धविश्वास नहीं कहता। जब मोरारजी देसाई की सरकार में सांसद ओमप्रकाश त्यागी द्वारा धर्म स्वातंत्र्य विधेयक के रूप में धर्मान्तरण के विरुद्ध बिल पेश हुआ तो इन्हीं मदर टेरेसा ने प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर इस विधेयक का विरोध किया और कहां था कि ईसाई समाज सभी समाज सेवा की गतिविधियां जैसे कि शिक्षा, रोजगार, अनाथालय आदि को बंद कर देगा अगर उन्हें अपने ईसाई मत का प्रचार करने से रोका जायेगा। तब प्रधान मंत्री देसाई ने कहा था इसका अर्थ क्या यह समझा जाये कि ईसाईयों द्वारा की जा रही समाज सेवा एक दिखावा मात्र हैं और उनका असली प्रयोजन तो धर्मान्तरण हैं। देश के तत्कालीन प्रधान मंत्री का उत्तर ईसाई समाज की सेवा के आढ़ में किये जा रहे धर्मान्तरण को तब भी वैसे ही उजागर करता था जैसा आज संघ प्रमुख के बयान से होता है। अब भी कोई मदर टेरेसा एवं अन्य ईसाई संस्थाओं के कटु उद्देश्य को जानकर भी धर्मान्तरण का समर्थन करता है तो उसकी बुद्धि पर तरस करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं किया जा सकता।

...डॉ विवेक आर्य

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह 2015 के कार्यकर्त्ता और कार्यक्रम व्यवस्थाएं

विद्यालय परिवार : श्री राजीव आर्य (चेयरमैन), श्री संजय कुमार (मैनेजर), कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा (मैनेजर आर्य पब्लिक स्कूल)। **मुख्य द्वार पर अभिनन्दन :** सर्वश्री ओमप्रकाश आर्य, अरुण प्रकाश वर्मा, श्रीमती वीणा आर्या,श्रीमती विभा आर्या, **भोजन बनवाना:** सर्वश्री सुखवीर सिह आर्य,, देवेन्द्र आर्य, मनोज (हलवाई)। **भोजन वितरण आर्य सेवा समिति एवं आर्यवीर दल :** सर्वश्री वीरेन्द्र आर्य (संयोजक), विजेन्द्र आर्य, रणधीर आर्य, संजीव आर्य, नरेश पाल आर्य, मनीष नरुला, सुन्दर आर्य, बृहस्पति आर्य, जगबीर आर्य, संजय आर्य, सुधीर मदान। **जल-पान की व्यवस्था :** सर्वश्री देवेन्द्र आर्य। **बच्चों का कोना :** सर्वश्री अरुण आर्य, बृजेश आर्य। **पूर्णकालिक यज्ञ व्यवस्थापक:** आचार्य ऋषिदेव, ब्र. सत्यप्रकाश। **होली चन्दन, सैंट व विशेष यज्ञ की सामग्री पहुंचाना:** सर्वश्री दिनेश शास्त्री।

भोजन/विदाई/ठंडाई/चाय वितरण: श्री अशोक मेहतानी, जोगेन्द्र खट्टर। **जानकारी फार्म भरवाना, एकत्र करना, मंच पर पहुंचाना :** श्री भुवनेश्वर शरण एवं आईटी टीम दिल्ली सभा। **वेबसाइट अपलोड :** श्री अश्वनी आर्य। **लाइव स्ट्रीम :** श्री आशीष आर्य। **लाइव टैलिकास्ट:** श्री राजेन्द्र कुमार जी (व्यवस्था), श्री सुभाष जी (एम.डी. एच. चैनल कोर्डिनेटर)। **सोशल मीडिया प्रचार:** श्री विवेक आर्य, श्री अविचल आर्य।

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकास पुरी नई दिल्ली 31 का वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज बाहरी रिंगरोड, विकासपुरी, नई दिल्ली के 31 वे वार्षिकोत्सव पर मुख्य अतिथि आर्य नेता व सुप्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक के कर कमलों द्वारा ईश्वर प्रदत्त वेदवाणी के प्रसारण की व्यवस्था का विधिवत उद्घाटन हुआ। इस व्यवस्था का संपूर्ण व्यय आर्य समाज बाहरी रिंग रोड के कर्मठ व यशस्वी प्रधान श्री वेद प्रकाश जी की प्रेरणा से आर्य समाज की वरिष्ठ सदस्य माता दयावन्ती जी व उनके पति श्री भानुराम जी द्वारा अपनी निजी बचत राशि द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. वेद प्रताप वैदिक, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी आचार्य सनत् कुमार जी, आचार्य ऊषर्बुध जी, माता दयावन्ती जी, श्री भानु कुमार जी, आचार्य चन्द्रशेखर जी शास्त्री, आर्य समाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश जी व महिला प्रधान श्रीमती ऊषा कुकरेजा, जी ने दीप प्रज्ज्वलित किया। परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित गुरुकुल में अध्यापन के कार्य में रत आचार्य सनत् कुमार जी को प्रबन्धन समिति, आर्यसमाज बाहरी रिंग, विकासपुरी की ओर से सम्मनित किया गया। आचार्य ऊर्बुध जी (जयपुर) ने वैदिक प्रवचनों द्वारा आर्यजनों पर एक विशेष छाप छोड़ी। इस अवसर पर उपस्थित, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा व उत्साही महामंत्री माननीय श्री विनय आर्य जी अत्यंत अभिभूत हुए। मुजफ्फर नगर से आये पंडित नरेश निर्मल ने मधुर भजनों के माध्यम से स्वामी दयानन्द द्वारा दिखाये गये राष्ट्र प्रेम के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। चार दिन का कार्यक्रम व्रती मुख्य यजमान श्रीमती राजरानी गुप्ता व श्री बालकृष्ण गुप्ता परिवार को प्रबंधन समिति द्वारा ''यज्ञ श्री' सम्मान प्रदान किया गया। वर्ष 2015 का ''आर्य श्रेष्ठ सम्मान'' श्री एम.पी. मलिक (उपप्रधान) आर्य समाज बाहरी रिंगरोड, विकासपुरी व ''आर्य महिला रत्न '' सम्मान 2015 मंत्री महिला समाज श्रीमती सुनीता पासी को प्रदान किया गया। बहुराष्ट्रीय कम्पनी आइ.बी.एम. के प्रमुख श्री सचिन गुप्ता को ''युवा प्रतिभा सम्मान'' प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रधान श्री वेदप्रकाश जी ने किया और अंत में सभी अतिथियों, प्रबंधन समिति व सहयोगियों को कार्यक्रम की विशेष सफलता के लिए धन्यवाद दिया।

आचार्य डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी का नाम हिन्दी सलाहकार सूची में शमिल

आचार्य डॉ. श्वेतकेतु शर्मा जी भारत सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों/विभागों की हिन्दी सलाहकार समितियों में राजभाषा विभाग की ओर से गैर सरकारी सदस्य के रूप में नामित किए जाने वाले विद्वानों की सूची में शामिल कर लिए जाने पर दिल्ली सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वानप्रस्थ की दीक्षा

पं. विद्या भूषण शास्त्री गौड रत्न जी ने 18 फरवरी 2015 को महर्षि दयानन्द बोधोत्सव समारोह के शुभ अवसर पर टंकारा में वानप्रस्थ की दीक्षा ली और उनका नाम वेद मुनि रखा गया। दिल्ली सभा की ओर से वेद मुनि को दीक्षित जीवन की शुभकामनाएँ।

39 वीं राष्ट्रीय योग चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक

हैदराबाद में आयोजित 39 वीं योग चैम्पियनशिप 26 दिसंबर से 29 दिसंबर 2014 में योगाचार्य श्री कृष्ण कुमार ने स्वर्ण पदक जीतकर एक कीर्तिमान स्थापित किया।

कृष्ण कुमार

महात्मा चैतन्य मुनि और डा. प्रतिभा पुरन्धि जी पुरस्कृत

श्री चैतन्य मुनि तथा डॉ. प्रतिभा पुरन्धि को भुवनेश्वर आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में क्रमश: ''दयानन्द पुरस्कार-2015'' और शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेद विदुषी पुरस्कार 2015 द्वारा सम्मानित किया गया है। डॉ. प्रियव्रत दास जी के सभापतित्व में आयोजित सम्मान समारोह में स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, आचार्य सुदर्शन देव, स्वामी सुधानन्द, श्री दीपक जी, श्रीमती शन्नोदेवी आदि ने सभा को संबोधित किया।

प्रियव्रत दास, प्रधान, आर्य समाज

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फर नगर उत्तर प्रदेश में प्रवेश प्रारंभ

गुरुकुल महाविद्यालय गंगा के पावन तट पर ऋषि महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि विषयों को अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम ज्ञान कराया जाता है। छात्रों को उत्तम संस्कार प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रात: एवं सायं सन्ध्या हवन एवं यौगिक क्रियायें करायी जाती हैं। नये सत्र के प्रवेश 01 अप्रैल 2015 से आरम्भ हो रहे हैं। संस्था में प्रवेश के लिए छात्र का 5वीं कक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। यहाँ पर छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष बल दिया जाता है।

सोमवीर सिंह, इन्चार्ज

श्यामजी कृष्ण वर्मा बलिदान दिवस समारोह

माण्डवा (कच्छ) आगामा महान 30 मार्च 2015 पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा के बलिदान दिवस के अवसर पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व व स्थानीय आर्य समाज एवं जन सहभागिता के साथ यह कार्यक्रम किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस-पुत्र, स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक, क्रान्तिवीर, इग्लैंड में इण्डियन हाऊस के संस्थापक एवं हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा के 85वाँ बलिदान दिवस का कार्यक्रम जी.एम.डी.सी. के सहयोग से होनेवाले बलिदान दिवस में अनेक कार्यक्रम होंगे। जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ(हवन) का कार्यक्रम रखा है, जिस के ब्रह्म आर्य समाज काकरीया अहमदाबाद के पुरोहित (धर्माचार्य) पं. श्री दिवाकरजी शास्त्री होंगे। हवन के पश्चात विभिन्न विद्वानो एवं गणमान्य व्यक्ति के द्वारा श्रद्धांजली अर्पित किया जायेंगे। कुछ विद्वानों, साधु-सन्तों का वेदभाष्य के व्यवस्थापक श्यामजी कृष्ण वर्मा विषय से सम्बन्धित व्याख्यान भी होंगे। इन सभी कार्यक्रमों की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान व गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख श्री सुरेशचन्द्रजी अग्रवाल करेंगे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सञ्चालन गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, आर्य समाज टङ्कारा के प्रमुख श्री हंसमुखभाई परमार करेंगे। इस क्रान्ति-तीर्थ स्थल माण्डवी के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अनेक गणमान्य जनों के भी आने की सूचना प्राप्त हो रही है। **गिरिश शर्मा**

एक वर्षीय सघन साधना शिविर का चतुर्मासस्य सम्पन्न

श्रद्धा और सद्भावना के साथ प्रभु की प्राप्ति में सर्वात्मना समर्पित होने के लिए, जिस एक वर्षीय सघन साधना शिविर का शुभारंभ 01 अक्टूबर 2014 को आर्यवन की पुण्यधरा पर स्थित दर्शन योग महाविद्यालय में हुआ। उसके चारमास की परिपूर्णता सकल भावी सम्भावनाओं के साथ हो गई।

स्वामी ब्रह्मविदान्द सरस्वती, आचार्य द.या. महा.

प्रवेश प्रारंभ गुरुकुल खेड़ाखुर्द दिल्ली - 82

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल खेड़ा-खुर्द दिल्ली-82 में कक्षा 6,7 व 8 वीं में प्रवेश प्रारंभ हो गया है। इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द वि. विद्यालय से उत्तीर्ण छात्र का 9 वी, 10 वी, 11 वी, व 12वी, में भी प्रवेश प्रारंभ हो गया है। निर्धन छात्रों का सम्पूर्ण खर्च गुरुकुल वहन करता है। इच्छुक अभिभावक सम्पर्क करें।

आचार्य सुधांशु

मंगलमय हो 2072

शत् शत् नमन हे नव संवत्सर!
प्रमुदित हर्षित जड़-चेतन हर॥
पाते यौवन, शक्ति-भक्ति सब।
नवल ऊर्जा पूर्ण वर्ष भर॥
गाते गायन विमल-धवल हो।
गायक, लेखक, विद्वन्, कविवर॥
कूप, तड़ाग, नदी, महासागर।
अमृत झरने झरते झर-झर॥
कोयल, पपीहा, मोर-मोरनी।
चातक हंसा बोले सस्वर॥
अकथनीय व अवर्णनीय हम।
पाते हैं बहु कृपा वर्ष भर॥

विमलेश बंसल आर्या

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह

आर्य समाज, मयूर विहार फेज़ 2, दिल्ली में 22 मार्च 2015 को समय प्रात: 8 बजे से 1:30 बजे तक, यज्ञ- प्रात: 8:00 से 9:30 बजे तक, भजन व गीत: प्रात: 10:45 से 11:15 बजे तक (संगीताचार्य अर्चना मोहन), प्रवचन: प्रात: 11:15 बजे से 12:15 बजे तक

(डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार)

ओम प्रकाश पाण्डेय
मंत्री

70 वां वार्षिकोत्सव राष्ट्र व गोरक्षा सम्मेलन

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल एवं श्रीराम कृष्ण गौशाला खेड़ा खुर्द दिल्ली

(1 से 12 अप्रैल 2015)

ऋग्वेद पारायण यज्ञ - प्रात: 7:00 से 9:00 बजे एवं सायं 5:30 से 7:00 बजे तक

(1 से 11 अप्रैल 2015 तक)

राष्ट्र-रक्षा एवं गौरक्षा सम्मेलन - प्रात: 10:15 से दोपहर 1:30 बजे तक (12 अप्रैल 2015)

आर्य जोगेन्द्र मान, महामंत्री

95 वां वार्षिकोत्सव पर यज्ञ

95 वां वार्षिकोत्सव आर्यसमाज नया बांस खारी बावली दिल्ली- 06
(30 मार्च 2015 से 5 अप्रैल 2015)
यज्ञ प्रतिदिन - प्रात: 7:00 से 9:00 बजे।
भजन व उपदेश - सायं 8:00 से 9:30 बजे।
ब्रह्मा एवं उपदेशिका - आचार्या अंजली जी (करनाल)
यज्ञ सहयोगी - पं. सहदेव शास्त्री

उत्तम कुमार आर्य
प्रधान

ईश्वर का स्वरूप

एक विचारोत्तेजक संगोष्ठी

सामाजिक जागरूकता के लिए प्रख्यात
शिक्षाविदों एवं दार्शनिकों का तर्कपूर्ण उद्बोधन

दिनांक : 5 अप्रैल 2015 (रविवार) को सायं 3:30 बजे से 8:00 बजे

स्थानः आर्य ओडिटोरियम, चन्द्रवती स्मारक ट्रस्ट, देसराज परिसर, (इस्कान मन्दिर के पास) सी – ब्लाक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

संगोष्ठी अध्यक्ष

प्रो.जे.एल. गुप्ता– पूर्व कुलपति जी.जी. विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.), पूर्व प्राचार्य, श्रीराम कालेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दु दर्शन

स्वामी राघवानन्द जी– प्रधान, श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं प्रमुख उदासीन आश्रम, पहाड़ गंज, दिल्ली

इस्लाम दर्शन

प्रोफेसर एम.एच. कुरैशी– पूर्व प्रवक्ता जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, चेयर प्रोफेसर, ए.एम. ख्वाजा, चेयर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया।

ईसाई दर्शन

डॉ. पी. जैकब चेरियन– विभागाध्यक्ष भौतिक विज्ञान विभाग, सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह – एसोसिएट प्रोफेसर, सेंट जॉन कालेज, आगरा

वैदिक दर्शन

डॉ. वागीश आचार्य– प्राचार्य, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय एटा, उत्तर प्रदेश

डॉ. विनय विद्यालंकार– सोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत) राजकीय पी.जी. कॉलेज रामनगर, नैनीताल एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड

उत्तर रेलवे ट्रेनिंग सैंटर में पांच दिवसीय योग शिविर

सत्ययोग आश्रम ट्रस्ट गाजियाबाद द्वारा आयोजित पंच दिवसीय योग शिविर का आयोजन दूर-संचार प्रशिक्षण केंद्र, उ.रे. गाजियाबाद में प्रारंभ हुआ। योग प्रशिक्षक योगी महेंद्र गोयल जी ने सुक्ष्म अभ्यासों के साथ-साथ गरूडासन, त्रिकोणासन, भुजंगासन, शलभासन, उत्तानपादासन आदि आसनों को कराते हुए आसन और शरीर के संबंधों की चर्चा की। साथ ही आसनों से शारीरिक कंपन, त्रिदोषनाशक, हृदय-बल कारक एवं संपूर्ण शरीरिक बलों की वृद्धि की चर्चा करते हुए योग प्रशिक्षुओं को दैनिक योग करने की प्रेरणा दी। एस.के. भारद्वाज ने सभी आगंतुकों को धन्यवाद देते हुए प्रसन्नता व्यक्त की।

हर्ष बवेजा, मीडिया प्रभारी

उड़ीसा में यज्ञशाला का निर्माण

आर्य समाज साकेत नई दिल्ली के प्रधान श्री पूर्णसिंह डबास जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं आर्य समाज की विचारधारा के प्रचार प्रसार हेतु उड़ीसा के 'बाइल गुडा' गाँव में एक यज्ञशाला का निर्माण कराया जिनके लिए आर्य समाज साकेत विशेष बधाई का पात्र है।

6 जनवरी 2015 को विशेष यज्ञ के उपरांत यज्ञशाला का भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। जिसमें सभी ग्रामवासियों आर्यजनों ने डॉ. डबास जी का भव्य स्वागत किया। डॉ. डबास जी ने अपने उद्बोधन में समस्त आगन्तुकों को आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरित किया।

श्रीमती प्रमिला नैय्यर, मंत्री

शहर-ए-काजी के पास है उर्दू में 'सत्यार्थ प्रकाश'

स्वामी दयानंद सरस्वती का प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश है जिसमें झलकता है उनका प्रमुख दर्शन। उर्दू व अरबी भाषा में दुर्लभ सत्यार्थ प्रकाश को शहर-ए-काजी मुफ्ती मौलाना वलीउल्लाह संभाल कर रखे हैं। उनका कहना है कि यह किताब शायद ही कहीं मिले। इससे एक बात जाहिर है कि स्वामी दयानंद अपनी बात हर तबके तक पहुंचाना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश उर्दू में भी लिखी। शहर-ए-काजी को यह पुस्तक कैसे मिली, यह भी दिलचस्प है। कहते हैं यह करीब 35 साल पहले अम्बेडकर नगर के टाडा में जहा के वह मूल निवासी हैं, आर्य समाजियों का बड़ा समागम चल रहा था। इस समागम में हिन्दू, मुस्लिम, सिख आदि सभी धर्म के लोग शामिल होते थे। शहर-ए-काजी भी उस समागम में गये थे। इनकी नजर इस किताब पर पड़ गयी। जो उर्दू में नजर आयी। उठाकर देखा तो सत्यार्थ प्रकाश थी। किताब पर रकम 25 रुपये लिखी थी। दुकानदार ने कहा कि यह 52 रुपये की है। शहर-ए-काजी ने कहा इस पर तो 25 रुपये लिखा है तो उसने कहा कि उर्दू में लेखनी दाहिनी तरफसे शुरू होती है। मैंने उसे खरीद ली। इस नायाब कृति के लिए यह रकम कुछ भी नहीं थी। इस को पढ़ने के बाद पता चला कि यह बेहतरीन ग्रंथ है। इसमें स्वामी दयानंद ने लिखा है कि ईश्वर एक है और वह पूरी सृष्टि में विराजमान है। उसे मानने वाले अलग-अलग नामों से उसे पुकारते हैं।

साभार
जागरण संवाददाता, गोरखपुर

विद्यालयों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

आर्य कन्या गुरुकुल
सैनिक विहार दिल्ली

आर्य वैदिक पाठशाला
आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली

आर्य पब्लिक स्कूल
राजा बाजार, नई दिल्ली

आर्य गुरुकुल
रानी बाग दिल्ली

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम्,
आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक हरिनगर

आर्य वीर दल प्रीत विहार दिल्ली

आर्य शिशुशाला, आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश
पार्ट-१, नई दिल्ली

नन्दिनी आर्या एवं अभिनन्दन आर्य
घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ नाटिका

आर्य वीर दल कीर्ति नगर दिल्ली

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादीखामपुर, नई दिल्ली (पं. रामचन्द्र देहलवी जी के जीवन पर आधारित नाटिका प्रस्तुत करते हुए)

स्वागत समिति द्वारा किया गया आगन्तुक आर्यजनों का स्वागत

स्वागत के लिए रंगोली

हास्य प्रस्तुत करते कवि श्री अनिल अग्रवंशी जी

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.(एन.डी.)-११/६०७१/२०१५-२०१७
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक १९/२० मार्च, २०१५
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३९/२०१५-१७
आर. एन. नं. ३२३८७/७७ प्रकाशन तिथि: बुधवार १८ मार्च, २०१५

कार्यक्रम का आरम्भ नवसस्येष्टी यज्ञ से हुआ

यज्ञ करते आर्य परिवार

यज्ञ ब्रह्मा डॉ. वेदपाल जी एवं वेदपाठीगण

श्रीमती मीना एवं श्री विनय आर्य

श्रीमती पायल एवं श्री नितिन कुमार जी

श्रीमती कृष्णा एवं श्री वीरेन्द्र खट्टर जी

श्रीमती सन्तोष एवं श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी

श्री भीमसेन आर्य जी एवं श्री जितेन्द्र आर्य जी

श्रीमती ललतेश एवं श्री नरेश चन्द्र गुप्ता जी

श्रीमती उमा शशि एवं श्री राजेन्द्र दुर्गा जी

कार्यालय स्टाल पर सेवाएं देते कार्यकर्त्ता

फूलों की होली खेलने का उत्साह कुछ अलग ही था

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; E-mail: aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह